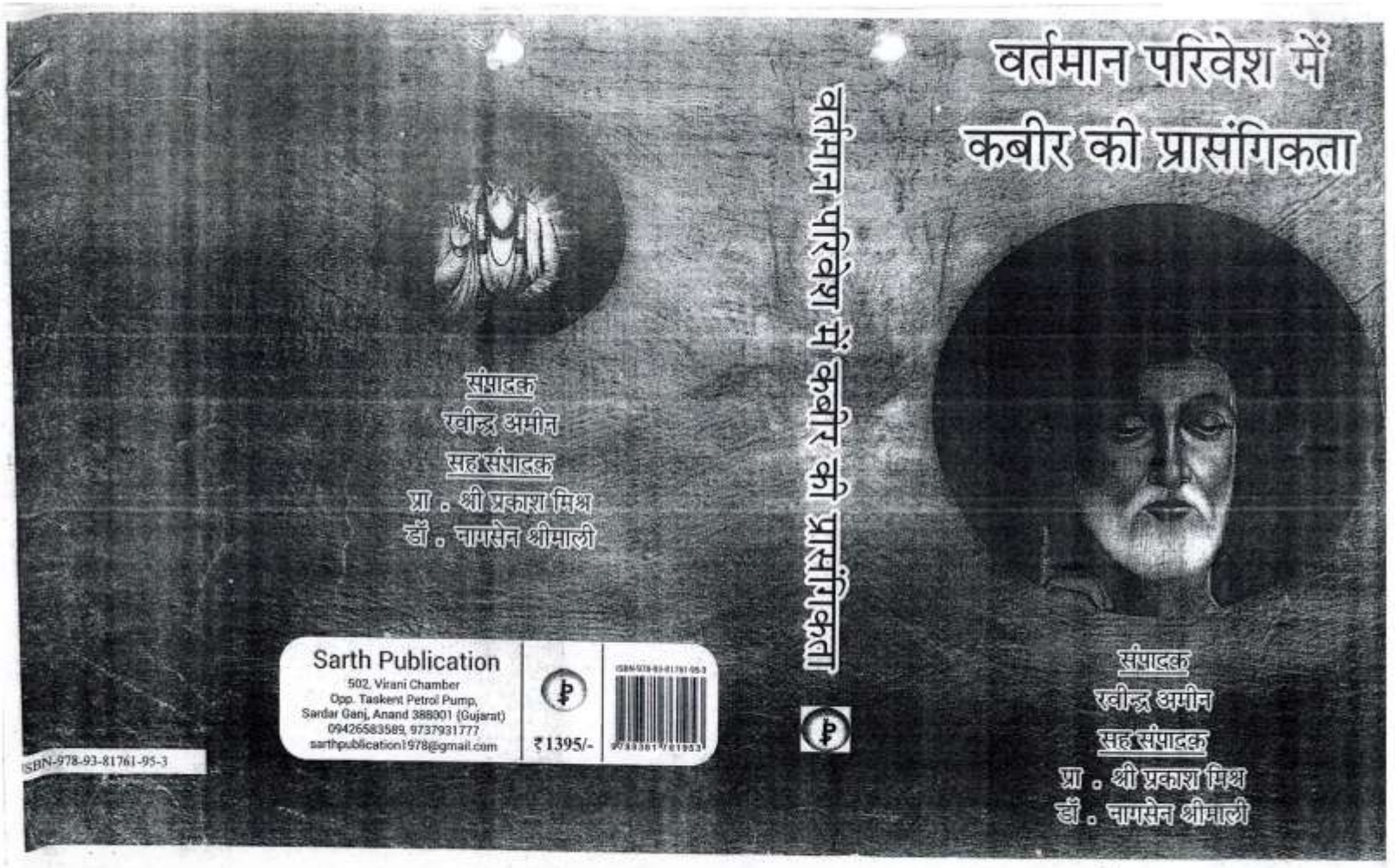

वर्तमान परिवेश में कबीर की प्रासंगिकता

संपादक
रवीन्द्र अमीन

सह संपादक
प्रा . श्री प्रकाश मिश्र
डॉ . नागसेन श्रीमाली

वर्तमान परिवेश में कबीर की प्रासंगिकता

संपादक
रवीन्द्र अमीन

सह संपादक
प्रा . श्री प्रकाश मिश्र
डॉ . नागसेन श्रीमाली

Sarth Publication
502, Virani Chamber
Opp. Taskent Petrol Pump,
Sardar Ganj, Anand 388001 (Gujarat)
09426583589, 9737931777
sarthpublication1978@gmail.com

₹1395/-

ISBN-978-93-81761-95-3

भारतीय समाज और कबीरकाव्य की प्रासंगिकता

डॉ. भारती राव
पालनपुर ।

साहित्य के संदर्भ में सर्वाधिक लोकप्रिय विषय है 'प्रासंगिकता' का । 'प्रासंगिकता' में मूल शब्द है – प्रसंग, जिसका है घटना, स्थिति, परिस्थिति आदि के रूप में लिया जाता है । डॉ. के विचारानुसार – 'प्रासंगिकता' आधुनिक समीक्षा का नवीन शब्द है, इसका अर्थ यह नहीं कि इसकी धारणा सर्वथा नयी है । 'प्रासंगिकता' का सम्बन्ध मुख्यतः पुराने साहित्य से होता है और वर्तमानयुग के में पुराने साहित्य की सार्थकता या प्रासंगिकता को देखना लक्ष्य होता प्रत्येक साहित्यिक रचना की सार्थकता इस बात पर निर्भर होती है कि विभिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न युगों में जन-जीवन के लिए कहाँ उपयोगी है ? इसी उद्देश्य से कलाकृतियों को समय-समय पर युग मूल्यों की कसौटी पर कसा जाता है ।

अतः साहित्य की प्रासंगिकता के मुख्य दो बिंदु उपस्थित होते रचनायुगीन संदर्भ और वर्तमान संदर्भ ।

मनुष्य के सामाजिक जीवन का संचालन और निर्धारण 'मूल्य' हैं । मूल्य के अभाव में कोई भी समाज अपना अस्तित्व नहीं बना है । 'मूल्य' समाज के लिए 'अत्यावश्यक' तत्त्व है । मूल्य ही समा संचालन करते हैं और सामाजिक संतुलन बनाए रखने में उनका महत् योगदान होता है । साहित्यकार इन्हीं मूल्यों को अपने साहित्य में

है । "शाश्वत मूल्यों का चित्रण जिस साहित्य में होता है वह 'शाश्वत' रहता है और ऐसा ही साहित्य 'प्रासंगिक' होता है । प्रासंगिकता का मूल्यों से सीधा संबंध है । जो मूल्य सार्वकालीक, सार्वदेशीय, सर्वमनुष्य पर आधारित होते है वे कभी नहीं बदलते वे आज महत्त्वपूर्ण है, वह कल भी थे और आज भी रहेंगे । प्रेम, शांति, करुणा, मानवता, आत्मविश्वास, अहिंसा, संयम, जीवदया, समानता, सेवाव्रत, त्याग, परोपकार, स्वतंत्रता, अपनापन, धर्मनिरपेक्षता आदि मूल्य सभी कालों में, सभी देशो में, सभी खंडों में, सभी मनुष्यों में रहे हैं । इनकी प्रासंगिकता सबसे अधिक होती है ।

कबीर के आविर्भाव के पाँच सौ वर्षों के अधिक के अन्तराल के बाद भी उनकी उपादेयता ज्यों कि त्यों बनी हुई है । कबीर की प्रासंगिकता पर विचार करने से पहले हमें एक दृष्टि वर्तमान समय पर डालनी होगी ।

मध्यकाल से लेकर आज आधुनिक काल में विज्ञान और तकनीकी ने अद्‌भूत प्रगति की है । मनुष्य ने सभी क्षेत्रों में अपना अधिकार जमा दिया है । भौतिक सुविधाएँ बेसुमार है । 'धन, संपत्ति, पुस्तकज्ञान' अपार है । मनुष्य यहाँ तक पहुँच गया है कि आकाश में उड़ने लगा है, समंदर में दौड़ने लगा है । विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि मनुष्य का नया जीवन पैदा कर सकता है । खून बदला जा सकता है, रोबर्ट बना सकता है । ये सभी सुविधाएँ उपयोगी है । सराहनीय भी है । पर क्या मनुष्य-मनुष्य के दिल के पास पहुँच पाया है ? परस्पर द्वेष-भाव कम हुआ है ? समाज में शांति, शोषण, अत्याचार, अन्याय, लूट-खसोट बढ़ गया है । आज की परिस्थिति जटिल है । सभी अपनी-अपनी प्रतिभा खिलाने में, अपनी ही प्रगति में लगे हुए हैं ।

वर्तमान समय में कबीर जैसे सच्चरित्र एकनिष्ठ निडर सुधारक की आवश्यकता है । संत कबीर ने अपने पदों द्वारा जीवन को मृदु और सुखी बनाने का सूत्र प्रदान किया है । आज का मानव दिशाभ्रान्त है और उसका मार्गदर्शन कबीर जैसे संतों के विचार ही कर सकते हैं ।

कबीर का साहित्य समाजसुधार का ही प्रबल प्रयत्न है । आज धर्मों और संप्रदायों के अनुयायियों के बीच ही तिरस्कार और भेदभाव की नई दीवारें खड़ी हो गई है । ऊँच-नीच, ब्राह्मण-शुद्र, सवर्ण-पिछड़े इस प्रकार